शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक नेतृत्व की अनिवार्य बातें
अगुवों की पुस्तिका

कलीसिया और आराधना

अध्याय 1: एक साथ एकत्रित होना: कौन, क्या, कहाँ

परिचय

यह अध्याय कलीसिया और आराधना के शीर्षक वाले मॉड्यूल शिष्यत्व की अनिवार्य बातों का भाग है। अध्यायों की यह श्रंखला इस बात की जाँच करती है कि बाइबल कलीसिया के उद्देश्य के संबंध में क्या सिखाती है और वह कैसे अस्तित्व में आई। कलीसियाई अगुवों को इसकी जानकारी होनी चाहिए कि स्वर्गारोहण के पश्चात् यीशु मसीह ने अपनी देह के रूप में (संसार में अपने राजदूतों के रूप में) कार्य करने के लिए कलीसिया की स्थापना क्यों की। पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरी कलीसिया को संसार भर में सुसमाचार का प्रसार करने और स्थानीय समुदाय में सेवा करने का निर्देश दिया गया है। कलीसिया आराधना करने, परमेश्वर के वचन की शिक्षा पाने और एक–दूसरे की सहायता करने एवं प्रोत्साहन देने के लिए नियमित रूप से एकत्रित होती है।

इच्छित श्रोता

इन अध्यायों के लक्ष्य पाठक वे उभरते हुए अगुवे हैं जो कलीसिया के अन्दर विशिष्ट सेवकाई के लिए तैयारी कर रहे हैं।

अगुवों की पुस्तिका एक अगुवे के रूप में आपकी तैयारी में सहायता करने के लिए है। इन अध्याय रूपरेखाओं का प्रयोग www.dehindi.org पर उपलब्ध शिष्यत्व अनिवार्य कार्यक्रम की अन्य सामग्रियों के साथ किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

कलीसिया और आराधना
अध्याय 1: एक साथ एकत्रित होना: कौन, क्या, कहाँ

उद्देश्य

इस अध्याय का उद्देश्य कलीसिया की पहचान और एक साथ एकत्रित होने के धर्मशास्त्रीय उद्देश्यों का अनुसंधान करना है।

अगुवों के लिए टिप्पणी

मसीहियत का इतिहास कलीसिया की आन्तरिक असहमतियों के फलस्वरूप हुए विभाजनों की श्रंखला को प्रकट करता है। परन्तु यीशु चाहता है कि कलीसिया संगठित रहे। कलीसिया की प्रकृति और उद्देश्यों की एक स्पष्ट धर्मशास्त्रीय जानकारी हमारी सहायता करेगी। यह अध्याय अनुसंधान करता है कि 'किसे' स्वयं को 'कलीसिया' का भाग कहना चाहिए, जब वे एकत्रित होते हैं तो क्या होता है, उन्हें कहाँ और कब एकत्रित होना चाहिए। हम व्यवहारिक स्तर पर इन विचारों का अनुसंधान करेंगे, यह ध्यान रखते हुए कि विश्वासों में एकीकृत होने पर भी हमारे बीच में अत्यधिक भिन्नता है। कलीसिया उन स्थानों पर अलग दिखेगी जहाँ मसीहियों को सार्वजनिक रूप से एकत्रित होने की अनुमति नहीं है।

परिचय

समूह से पूछने के लिए निम्नलिखित में से दो या तीन प्रश्नों को चुनें।

- आप 'कलीसिया' शब्द को कैसे परिभाषित करेंगे? एक 'सच्ची' कलीसिया कैसे बनती है?
- यदि आप विभिन्न कलीसियाई मण्डलियों के सदस्य रहे हैं या वहाँ गए हैं तो उनके बीच की सबसे बड़ी भिन्नताएँ क्या हैं? उनके बीच की समानताएँ क्या हैं?
- कलीसिया और एक ऐसे समूह के लोगों के बीच क्या अन्तर है जो कुछ सीखने या करने के लिए एक साथ एकत्रित होते हैं?
- कौन वास्तव में कलीसिया से संबंधित है? हमें कैसे पता चलेगा कि कौन कलीसिया से संबंधित है और कौन नहीं?

अध्ययन

भागीदारों को निम्नलिखित बिन्दुओं के संबंध में निर्देश दें।

सिखाएँ

- **कलीसिया क्या है?** जब हम कलीसिया के रूप में आराधना करने के लिए इकट्ठे होते हैं तो यह जानना अद्भुत है कि हम अकेले नहीं हैं। संसार भर के करोड़ों लोगों के साथ–साथ हम से पहले जीवित रहे करोड़ों लोग भी विश्वासियों के इस परिवार के सदस्य हैं। मसीहियों के प्रत्येक समूह में कुछ अन्तर होते हैं परन्तु वैश्विक कलीसिया में अत्यधिक समानता है और वह तभी से इकट्ठी हो रही है जब यीशु पृथ्वी पर था।

  - **कलीसिया परमेश्वर की योजना है:** जब हम कलीसिया के बारे में बात करते हैं तो हमें याद रखना चाहिए कि यह हमारी योजना नहीं थी; परमेश्वर की सदा से यह इच्छा थी कि वह स्वयं के लिए ऐसे विश्वासयोग्य और क्षमा पाए हुए लोगों के समूह को इकट्ठा करे जो उससे प्रेम करते हैं।

    - पुराने नियम में विश्वासयोग्य लोगों के एकत्रित झुण्ड को 'सभा' कहा जाता था। (प्रेरितों 7:38; भजन 22:22)
    - 'कलीसिया' का अर्थ लोगों का झुण्ड या मण्डली है और मूलतः इसका प्रयोग किसी उद्देश्य के साथ इकट्ठे होने वाले किसी भी समूह के लिए किया जाता था।
    - नये नियम में 'कलीसिया' शब्द यहूदियों और यूनानियों दोनों की मण्डलियों को बताता है जो मसीह में नई वाचा (इफिसियों 2:11–22) से जुड़े थे।
    - कलीसिया की खोज मनुष्यों द्वारा मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु परमेश्वर द्वारा परमेश्वर के लिए की गई थी (हालांकि हमारे लिए बहुत से लाभ हैं!) यीशु ने कहा, "मैं अपनी कलीसिया को बनाऊँगा।" (मत्ती 16:18)

  - **दृश्य और अदृश्य कलीसिया:** हम जानते हैं कि कलीसिया लोगों के एकत्रित होने के भवन या आराधना की समयावधि से कहीं बढ़कर है। कलीसिया *परमेश्वर की प्रजा* है। हम पूछ सकते हैं कि कौन संबंधित है या हमें कैसे पता चलेगा कि कलीसिया वास्तव में कौन है। सरल सा उत्तर है कि हमें पता नहीं चल सकता। पूरी तरह से नहीं। बाइबल बताती है कि एक मसीही की तरह दिखने या कार्य करने वाला या यीशु मसीह के सच्चे विश्वासी होने का अंगीकार करने वाला प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर का नहीं है। वे धोखे में हो सकते हैं या किसी कारणवश दूसरों को धोखा देने का प्रयास कर रहे हैं।

    - **दृश्य कलीसिया:** दृश्य कलीसिया वे लोग हैं जो स्वयं को मसीही कहते हैं और उन भवनों में एकत्रित होते हैं जिन्हें हम कलीसियाएँ (या घर, अन्य इमारतें, खुली जगह) कहते हैं। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति सच्चा विश्वासी हो सकता है और नहीं भी, हालांकि वे कलीसिया के उद्देश्यों के अधीन रहते हैं, मसीही होने का अंगीकार करते हैं, और पवित्र रस्मों में भाग लेते हैं।

    - **अदृश्य कलीसिया:** अदृश्य कलीसिया में वे सब शामिल हैं जिनके लिए मसीह ने अपनी जान दी। (इफिसियों 5:25) इसलिए, सच्ची कलीसिया में केवल वही लोग शामिल हैं जिन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा वास्तव में उद्धार पाया है। हम यह भरोसा रख सकते हैं कि परमेश्वर उन्हें जानता है जो उसके हैं। (2 तिमुथियुस 2:19)

- **कलीसिया के उद्देश्य:** परमेश्वर ने कलीसिया को एक माध्यम के रूप में बनाया है जिसके द्वारा वह अपने उद्देश्यों को पूरा करता है। परमेश्वर चाहता है कि यह कार्य उसके पवित्र और चुने हुए लोगों के द्वारा समुदाय में किया जाए। कलीसिया का अस्तित्व निम्नलिखित को पूरा करने के लिए है:

  - **सत्य की घोषणा करना**

- **एक साथ आराधना करना**
- **पवित्रता में बढ़ना**
- **प्रेम में सेवा करना**

➢ **कलीसिया कैसी है:** इसके अतिरिक्त, कलीसिया में कुछ विशेषताएँ होती हैं। बाइबल कलीसिया को मसीह की दुल्हन के रूप में बताती है इसीलिए हम कई बार कलीसिया का उल्लेख स्त्रीलिंग के रूप में करते हैं। वह निम्नलिखित है:

- **एक:** उद्देश्य में एक (प्रेरितों 4:32; यूहन्ना 17:21)
- **पवित्र:** मसीह में विश्वास के द्वारा अलग और पाप से शुद्ध की गई। (लैव्यवस्था 11:44–45; 1 पतरस 1:14–16)
- **सार्वभौमिक:** कलीसिया किसी एक भौगोलिक क्षेत्र, एक परिवार, एक नस्ल या राष्ट्रीयता तक सीमित नहीं है विविध लोगों से बनी है जिनका एक सिर, यीशु मसीह है। (कुलुस्सियों 3:11; लूका 9:6)
- **प्रेरितीय:** कलीसिया की शुरूआत प्रेरितों से हुई, आज तक प्रेरितों की शिक्षा को मानती आई है जिसमें परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र शामिल है। (प्रेरितों 1:1–2; प्रेरितों 2:42; इफिसियों 2:19–21)

➢ **सच्ची और झूठी कलीसिया के बीच पहचान करना:** जिस प्रकार कुछ लोग झूठा दिखावा करते हुए स्वयं को मसीही कहते हैं उसी प्रकार लोगों की ऐसी मण्डलियाँ भी हैं जो कलीसिया के समान दिखती और कार्य करती हैं परन्तु सच्ची कलीसिया से उनका कोई संबंध नहीं है। एक सच्ची कलीसिया बाइबल में वर्णित सुसमाचार का वफादारी से प्रचार करती है। यह सुसमाचार में न तो कुछ जोड़ती है और न ही सुसमाचार के सन्देश में बदलाव लाती है। सच्ची कलीसिया बपतिस्मा और प्रभु भोज की रस्मों को परमेश्वर के वचन के अनुसार पूरा करती है। नही ंतो वह एक झूठी कलीसिया है जिसे झूठे भविष्यद्वक्ता या उपदेशक द्वारा शिक्षा जाती है। (2 कुरिन्थियों 11:1–15; गलातियों 1:6–12; मरकुस 13:22; 2 पतरस 2:1–3)

❖ **कौन एकत्रित होता है?** बाइबल में विभिन्न आकार के समूहों का उल्लेख है जिन्हें 'कलीसिया' कहा गया है। किसी भी स्तर पर विश्वासियों के समुदाय को एक कलीसिया कहा गया है।

- **लघु समूह या घरेलू कलीसियाएँ** (रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19)
- **क्षेत्रीय कलीसियाएँ** (1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 1 कुरिन्थियों 1:2)
- **राष्ट्रीय कलीसियाएँ** (प्रेरितों 9:31)

➢ **सदस्यता:** प्रत्येक कलीसियाई समूह में सदस्यता की योग्यताएँ अलग–अलग हो सकती हैं। कई बार सदस्यता कक्षा या कलीसिया के अगुवे के साथ साक्षात्कार की माँग रखी जाती है। आमतौर पर एक व्यक्ति को सदस्य मान लिया जाता है यदि वह:

- नियमित रूप से उपस्थित रहता है
- साझे कार्य में आर्थिक योगदान देता है
- आम विश्वासों को मानता है
- बपतिस्मा के द्वारा यीशु पर व्यक्तिगत विश्वास की सार्वजनिक घोषणा करता है और प्रभु भोज में शामिल होने के द्वारा निरन्तर विश्वास की घोषणा करता है।

एक स्थानीय कलीसिया से जुड़ना महत्वपूर्ण है। यीशु मसीह पर हमारा विश्वास हमें वैश्विक अदृश्य कलीसिया का सदस्य बनाता है परन्तु विश्वासियों के एक विशिष्ट समूह से जुड़ना

महत्वपूर्ण है क्योंकि हम उनके प्रति जवाबदेह होते हैं। साथ ही हम दूसरों से सीखते हैं, संसाधनों को आपस में बाँटते हैं और एक साथ मिलकर सुसमाचार का प्रचार करते हैं।

- **एक–एक कलीसिया को परिभाषित करने वाले अवयव:** एक साथ एकत्रित होने वाले मसीहियों के प्रत्येक समूह की अपनी परिभाषित करने वाली विशेषताएँ होंगी। उनमें से प्रत्येक कलीसिया की अद्वितीय अभिव्यक्ति है और वे वैश्विक अदृश्य कलीसिया से संबंधित हैं। इन परिभाषित करने वाले अवयवों में से कुछ इस प्रकार हैं:
  - **संगठन:** ये कलीसियाओं के समूह होते हैं जो प्रशासन या आराधना जैसी समान कलीसियाई रीतियों और विशेष सैद्धान्तिक विश्वासों के समूह को मानते हैं।
  - **भाषा या राष्ट्रीयता:** शिक्षण और आराधना की आसानी के लिए एक भाषा बोलने वाले एक साथ एकत्रित होने का निर्णय ले सकते हैं। कई बार किसी एक राष्ट्रीयता वाले लोग एक कलीसिया के रूप में एकत्रित होने का निर्णय ले सकते हैं, विशेषत: यदि वे किसी दूसरे देश के या शरणार्थी हैं।
  - **निकटता:** कलीसियाएँ सामान्यत: उन विश्वासियों से बनी होती है जो एक–दूसरे के निकट रहते हैं।

- **समान विश्वास:** किन विश्वासों में समानता होनी चाहिए? किन बातों पर हम भिन्न हो सकते हैं? यहीं पर कलीसियाई इतिहास में विश्वास वचन और विश्वास के अंगीकार सहायक रहे हैं। वे मसीहियत के केन्द्रीय विश्वासों को बताते हैं। कलीसियाएँ विश्वास के विभिन्न सिद्धान्तों पर सहमत हो सकती हैं जबकि कलीसियाई रीति, स्थान और शैली में भिन्नता हो सकती है। एक सामान्यत: प्रयोग किया जाने वाला विश्वास वचन यहाँ दिया गया है:

नाईसीन विश्वास वचन
नाईसीन विश्वास वचन *आर्मेनियाई संस्करण का हिन्दी अनुवाद*
हम सर्वसामर्थी पिता, एकमात्र परमेश्वर पर विश्वास करते हैं जो स्वर्ग और पृथ्वी, दृश्य और अदृश्य वस्तुओं का रचने वाला है। और परमेश्वर के पुत्र, पिता परमेश्वर के एकलौते, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं जो तत्व में पिता के समान है। जो परमेश्वर है, ज्योति है, सच्चा परमेश्वर है; रचा हुआ नहीं है, पिता के समान प्रकृति का है, जिसके द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी, दृश्य और अदृश्य सारी वस्तुएँ उत्पन्न हुई। जो हम मानवों के लिए और हमारे उद्धार के लिए स्वर्ग से उतर आया, देहधारी हुआ, मनुष्य बना, पवित्र आत्मा के द्वारा पवित्र कुँवारी मरियम से सिद्ध जन्म लिया। जिसके द्वारा उसने देह, प्राण, और मन और वह सब आभासी नहीं परन्तु वास्तव में पाया जो एक मनुष्य में होता है। उसने कष्ट सहा, क्रूस पर चढ़ाया गया, गाड़ा गया, तीसरे दिन जी उठा, उसी देह के साथ स्वर्गारोहण किया, और पिता के दाहिने हाथ बैठ गया। वह उसी देह और पिता की महिमा के साथ जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने के लिए आने वाला है; उसके राज्य का कोई अन्त नहीं है। हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं जो रचा हुआ नहीं है और सिद्ध है; जिसने व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं, और सुसमाचारों के द्वारा बातें की; जो यरदन पर उतर आया, प्रेरितों के द्वारा प्रचार किया, और संतों में वास किया। हम केवल एक, सार्वभौमिक, प्रेरितीय, और पवित्र कलीसिया पर; पापों से छुटकारे और क्षमा के लिए मन फिराव में एक बपतिस्मा पर; और मृतकों के पुनरूत्थान पर, आत्माओं और देहों के अनन्त न्याय

पर, स्वर्ग के राज्य और अनन्त जीवन पर भी विश्वास करते हैं।

- **सदस्य, आगन्तुक, मेहमान:** किसी भी कलीसियाई मण्डली में विविध प्रकार के लोग उपस्थित हो सकते हैं। विश्वासियों की सुरक्षा संबंधी चिन्ताओं वाले स्थानों के अलावा अधिकाँश कलीसियाओं के द्वारा किसी आगन्तुक या मेहमान या किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए खुले रहते हैं जो आराधना में शामिल होना चाहता है या परमेश्वर के वचन को सुनना चाहता है। उपस्थित आगन्तुकों और मेहमानों में ऐसे मसीही शामिल हो सकते हैं जो दूसरी मण्डलियों से हैं साथ ही ऐसे अविश्वासी भी हो सकते हैं जो मसीहियत का अनुसंधान कर रहे हैं और अपने प्रश्नों के उत्तर खोज रहे हैं।

पूछें:

अपने भागीदारों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें और एक साथ चर्चा करें:

- आप किन संगठनों से परिचित हैं?
- उनके बीच क्या भिन्नताएँ हैं? क्या समानताएँ हैं?
- संगठनों में विभाजित कलीसियाओं की क्या हानियाँ हैं?
- क्या संगठनों के कोई सकारात्मक परिणाम हैं?

सिखाएँ:

- **जब वे एकत्रित होते हैं तो क्या होता है?** यह समझने के बाद कि कलीसिया किन से निर्मित है, हम यह सोच सकते हैं कि एक कलीसिया के सदस्यों के एकत्रित होने पर क्या होना चाहिए? एक कलीसियाई मण्डली की गतिविधियों के बारे में बाइबल क्या कहती है?

  - **आरम्भिक कलीसिया:** इस प्रश्न के उत्तरों के लिए हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देख सकते हैं कि कलीसिया की शुरूआत के समय क्या हो रहा था। शुरूआती विश्वासी यहूदी थे जो मन्दिर में एकत्रित होते थे जहाँ वे सदा से परमेश्वर की आराधना करते आए थे। परन्तु अब वे उसकी आराधना पुरानी बलिदान की प्रणाली के बजाय यीशु मसीह के द्वारा उद्धार की एक नई जानकारी के साथ करते थे। जब कलीसिया बढ़ने लगी और अन्यजातियों को शामिल किया जाने लगा तो विश्वासी घरों और अन्य स्थानों में एकत्रित होते थे। हम इन वचनों में शुरूआती कलीसिया की कुछ बातों को देख सकते हैं:

कार्य

भागीदारों को 4 या 5 के समूहों में विभाजित करें और प्रत्येक समूह को इस परिच्छेद में दी गई आरम्भिक कलीसिया की गतिविधियों की सूची बनाने के लिए कहें। (बारी–बारी से, इसे भागीदारों के सम्पूर्ण समूह के लिए पढ़ें और एक साथ एक सूची बनाएँ।) इनमें से किन गतिविधियों को हम आज भी कलीसिया में करते हैं? इस आरम्भिक कलीसिया की पृष्ठभूमि किस प्रकार भिन्न है?

- प्रेरितों 2:42–47

फिर प्रत्येक छोटे समूह को इन 9 रीतियों में से किसी एक को दें और उन्हें वचनों को खोजने के लिए कहें। यह ध्यान रखें कि प्रत्येक बिन्दू को कम से कम एक समूह द्वारा किया जाए। उन्हें वहाँ बताई गई गतिविधि को लिखने के लिए कहें। इन वचनों से आरम्भिक कलीसिया के बारे में हमें जो जानकारी मिलती है उसकी कक्षा के रूप में एक साथ मिलकर एक सूची बनाएँ।

❖ **आरम्भिक कलीसिया की रीतियाँ:** हम नये नियम की पत्रियों से आरम्भिक कलीसिया के बारे में कुछ बातों को सीख सकते हैं:

1. **वे सप्ताह के पहले दिन – रविवार को एकत्रित होते थे।** (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:1–2)
2. **वे परमेश्वर के वचन को पढ़ते और सिखाते थे।** (प्रेरितों 11:25–57; प्रेरितों 17:11; प्रेरितों 2:42)
3. **वे प्रभु भोज में भाग लेते थे।** (1 कुरिन्थियों 11:17–33)
4. **वे गीत गाते थे।** (कुलुस्सियों 3:16; इफिसियों 5:19)
5. **वे प्रार्थना करते थे।** (प्रेरितों 1:14; प्रेरितों 12:5; प्रेरितों 12:12)
6. **उनके पास जो था वे उसे कलीसिया के कार्य के लिए देते थे।** (प्रेरितों 2:44–45; प्रेरितों 4:32–35)
7. **वे अपने आत्मिक वरदानों का प्रयोग करते थे।** (1 कुरिन्थियों 12:24–26; रोमियों 12:4–5)
8. **वे जरूरतमन्दों की सहायता करते थे।** (प्रेरितों 6:1–6; प्रेरितों 2:45; प्रेरितों 4:34; 1 तिमुथियुस 5:16)
9. **वे सुसमाचार सुनाते थे।** (2 कुरिन्थियों 8:18; प्रेरितों 5:42; 2 कुरिन्थियों 10:15–16)

सिखाएँ

➢ **हम क्या करते हैं:** आज की कलीसिया की गतिविधियाँ आरम्भिक कलीसिया के समान ही हैं। उनमें परमेश्वर की आराधना करना, प्रार्थना करना, परमेश्वर के वचन की घोषणा, प्रचार करना और सिखाना, दान देना, सेवा करना, और एक–दूसरे के साथ समय व्यतीत करना शामिल है। प्रभु भोज नियमित रूप से होना चाहिए। कुछ कलीसियाएँ एकत्रित होने पर सख्त आराधना विधि या संरचना का प्रयोग करती हैं। कुछ अन्य कलीसियाएँ गतिविधियों की व्यवस्था में स्वतंत्रता को व्यक्त करती हैं। कुछ मण्डलियों में एक नियमित उपदेशक या प्रचारक होता है। दूसरी कलीसियाओं में सदस्य बारी–बारी से एक–दूसरे को सिखा सकते हैं। महत्वपूर्ण बात नियमित रूप से एकत्रित होना और एक साथ मिलकर परमेश्वर की आराधना करना है।

➢ **आराधना में व्यवस्था:** चाहे हम किसी भी तरीके का प्रयोग करें हमें यह निर्देश दिया गया है कि कलीसिया की सभाएँ व्यवस्थित और परमेश्वर की आराधना पर केन्द्रित होनी चाहिए।

- 1 कुरिन्थियों 20:26–33

❖ **वे कहाँ और कब एकत्रित होते हैं?** कलीसिया क्या है और एक साथ एकत्रित होने पर उन्हें क्या करना चाहिए आदि बातों को देखने के बाद हम यह सोच सकते हैं कि उन्हें कब और कहाँ एकत्रित होना चाहिए।

➢ **सब्त और रविवार के दिन:** पुरानी वाचा में सृष्टि के सातवें दिन के आधार पर सब्त का दिन शनिवार का दिन था। परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग कोई काम न करने और यह स्मरण करने के द्वारा सब्त का दिन मनाते थे कि किस प्रकार परमेश्वर ने उन्हें दासत्व से स्वतंत्रता देकर विश्राम दिया था। आरम्भिक कलीसिया प्रभु भोज और परमेश्वर की आराधना में शामिल होने के लिए सप्ताह के पहले दिन (रविवार) एकत्रित होने लगी। (प्रेरितों 20:7) इसका कारण यह था कि नई कलीसिया यीशु के पुनरूत्थान को यादगार बनाना चाहती थी जो रविवार सुबह हुआ था। नये नियम में हमें एकत्रित होने के स्थान के संबंध में स्वतंत्रता दी गई है। मसीहियों के लिए रविवार सुबह आराधना के समय के लिए एकत्रित होना आम है। (कुलुस्सियों 2:16–17; रोमियों 14:5–6; गलातियों 4:9–10)

➢ **पूरे सप्ताह:** कलीसिया के शुरूआती दिनों में विश्वासी प्रतिदिन एकत्रित होते थे। आज हमारे लिए प्रार्थना, विशेष आराधना, बाइबल कक्षा या अध्ययन, या संगति का समय हो सकता है जो पूरे सप्ताह चलता है।

- **हम कहाँ एकत्रित होते हैं:** पुरानी वाचा की रीतियों से भिन्न अब हमें परमेश्वर की आराधना के लिए एक मन्दिर या आराधनालय को अलग करने की आवश्यकता नहीं है। आरम्भिक कलीसिया में विश्वासी एक–दूसरे के घरों में, आराधनालय में (धार्मिक भवन) या खुली जगह पर भी आराधना करते थे। आज कलीसियाएँ अक्सर भवनों में एकत्रित होती हैं परन्तु वास्तव में विश्वासी परमेश्वर की आराधना के लिए कहीं भी एकत्रित हो सकते हैं।
    - मत्ती 18:20; प्रेरितों 16:13; 1 कुरिन्थियों 16:19

- **उपसंहार:** बाइबल हमारे इन प्रश्नों का उत्तर देती है कि कलीसिया कौन है, इसके उद्देश्य क्या हैं, एक साथ एकत्रित होते समय विश्वासियों को क्या करना चाहिए, और कलीसिया कहाँ एकत्रित होती है। हमें यह याद रखना चाहिए कि हम कलीसिया में जाते या कलीसिया में शामिल नहीं होते हैं बल्कि (विश्वासियों के रूप में) हम कलीसिया हैं। एक साथ एकत्रित होना परमेश्वर के लिए हमारे जीवन को व्यतीत करने का विस्तार है।

विचार–विमर्श

- आरम्भिक कलीसिया की गतिविधियाँ किस प्रकार आज आपकी कलीसिया के समान थी? उनमें क्या भिन्नता थी?
- आरम्भिक कलीसिया की किन गतिविधियों को आज भी कलीसिया में किया जाता है? क्या नहीं किया जा रहा?
- किसे आपकी कलीसिया का सदस्य बनने की अनुमति है? क्या वहाँ ऐसी गतिविधियाँ हैं जिनसे उन लोगों को अलग रखा जाता है जो सदस्य नहीं हैं? कलीसियाएँ सदस्यों और गैर–सदस्यों में अन्तर क्यों करती हैं?
- कलीसियाओं के आयु, सामाजिक स्तर, नस्ल या अन्य विभाजक अवयवों के आधार पर एक–दूसरे से अलग होने का क्या खतरा है? क्या एक कलीसिया में विभिन्न स्थानों के लोग होने चाहिए या एक ही स्थान के? एक कलीसिया सभा के प्रभाव होने के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण अवयव क्यों है?
- कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किस एक बात में आप कलीसिया की सहायता कर सकते हैं?

प्रार्थना

प्रार्थना के साथ अध्याय को समाप्त करें। पवित्र कलीसिया और उन सारे विश्वासियों के लिए परमेश्वर की स्तुति करें जो संसार के प्रत्येक कोने में यीशु के नाम में इकट्ठे होते हैं। प्रार्थना करें कि कलीसिया एक बने जैसे यीशु और पिता एक हैं। प्रार्थना करें कि कलीसियाएँ आत्मा और सत्य में एकीकृत हों और परमेश्वर के वचन, सुसमाचार के प्रचार, और विश्वासियों की संगति के प्रति वफादार बनी रहें। अपनी स्थानीय कलीसियाओं के लिए प्रार्थना करें कि वे परमेश्वर के आत्मा और उसकी सामर्थ के द्वारा बल प्राप्त करें।